अध्यक्ष महोदय : श्री भजनलाल - अनुपस्थित।

डा० आर० मुथैया (पेरियाकुलम) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री अर्जुन चरण सेठी (भद्रक) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री एन० जनार्दन रेड्डी (बापतला) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

डा० टी० सुब्बारामी रेड्डी (विशाखापत्तनम) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : अध्यक्ष महोदय श्री टी० सुब्बारामी रेड्डी द्वारा प्रस्तावित श्री पी० एम० सईद को उपाध्यक्ष पद के लिए चुने जाने के प्रस्ताव का मैं पुरजोर समर्थन करता हूं।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री शकुनी चौधरी (खगड़िया) : अध्यक्ष महोदय, जो प्रस्ताव पी० एम० सईद को उपाध्यक्ष बनाने का है, मैं उसका समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी (मदुरै) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री सुरेन्द्र सिंह (भिवानी) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री मुरासोली मारन (मद्रास मध्य) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : श्री आर० राम गवई - अनुपस्थित।

श्री अमर राय प्रधान (कूचबिहार) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री पी० आर० किन्डिया (शिलांग) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : श्री सनत कुमार मंडल अनुपस्थित।

श्री ई० अहमद (मंजेरी) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

अध्यक्ष महोदय : श्री फ्रांसिको सारदीना - अनुपस्थित।

अब श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत तथा श्री शरद पवार द्वारा समर्थन किया गया प्रस्ताव सभा के समक्ष विचाराधीन है और मैं यह प्रस्ताव सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है :

"कि श्री पी० एम० सईद, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

(प्रस्ताव स्वीकृत हुआ)

अध्यक्ष महोदय : मैं घोषणा करता हूं कि श्री पी० एम० सईद को इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में चुन लिया गया है।

श्री पी० एम० सईद को सभा के नेता, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, विपक्ष के नेता श्री शरद पवार और कुछ अन्य दलों और समूहों के नेता उनके आसन तक ले गये।

अपराह्न 12.15 बजे

उपाध्यक्ष को बधाइयां

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री सईद को उनके उपाध्यक्ष निर्वाचित होने पर बहुत बहुत बधाई देता हूं, उनका अभिनन्दन करता हूं। 'देर आए, दुरुस्त आए' मगर देर सईद साहब के व्यक्तित्व से जुड़े हुए किसी सवाल को लेकर नहीं थी, देर इसलिए हुई कि परम्परा का पालन किस तरह से किया जाए। सईद साहब से इस सदन में और सदन के बाहर संबंध स्थापित करने का मौका मिला है। वह बड़े हंसमुख हैं, मितभाषी हैं और मिष्टभाषी हैं। वह कब कड़ा होना है, यह भी जानते हैं और कब नर्म होना है, यह भी जानते हैं। वह जिस सुंदर द्वीप के निवासी हैं, उस द्वीप की सुंदरता वह मुख्य भूमि में भी लेकर आए हैं। सदन के नौवीं बार सदस्य चुने गए हैं। मैं 1957 में पहली बार आया और उसके

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

बाद उनका पदार्पण हुआ। उन्होंने अनेक जिम्मेदारी के पद संभाले, मंत्री रहे, समितियों में रहे और समितियों के अध्यक्ष के रूप में भी दायित्व का निर्वाह किया और सबको साथ लेकर चलने का उन्होंने प्रयास किया, इसमें उन्हें सफलता भी मिली। अब उनके ऊपर एक नई जिम्मेदारी आ रही है। मैं उनकी सफलता की कामना करता हूं। अध्यक्ष महोदय, आपका भी बोझा थोड़ा कम हो जाएगा। मैं एक बार फिर सईद साहब को बधाई देता हूं।

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, मैं सईद साहब का अभिनन्दन करने के लिए यहां खड़ा हूं। इस सदन में कई रिकार्ड श्री पी॰ एम॰ सईद साहब ने किए, जैसे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि वह नौ बार इस सदन के सदस्य रहे हैं। इसमें एक बार अनअपोज्ड सदन में आने का मौका भी उनको मिला था। उम्र के 26 साल में यह सदन में आ गए और तब से आज तक लगातार इस सदन के सदस्य के रूप में बहुत अच्छा काम करते रहे हैं। शायद उनका यह रिकार्ड और हो सकता है कि उनके क्षेत्र लक्षद्वीप में कुल वोटर्स की संख्या 34 हजार है। यह भी इस सदन का एक रिकार्ड हो सकता है, जो मुझे मालूम नहीं है। उनकी एक स्पैशियलिटी और भी है और वह यह कि वे 1967 से लगातार चुनकर आए हैं और तब से आजतक उनके खिलाफ एक ही कैंडिडेट खड़ा रहा है।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : वह भी जनता दल का।

श्री शरद पवार : अलग-अलग पार्टी से, जिस पार्टी की स्थिति अच्छी होती है, उस पार्टी से खड़े हो जाते हैं। इसलिए आज की परिस्थिति को देखने के बाद सबको साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। अपने क्षेत्र से इनका पूरा राजनीतिक कैरियर सबको साथ लेकर चलने का है। इस पद पर ये कामयाब होंगे, मुझे पूरा विश्वास है। मुझे व्यक्तिगत खुशी है, क्योंकि 1967 से उन्होंने अपने राजनीतिक कैरियर की शुरुआत की और मैंने भी उसी साल से शुरू की। उस साल से हम दोनों ही पार्लियामेंट्री क्षेत्र में आए और आज तक इस कन्टीन्यूटी को रखने का मौका मिला है। मुझे खुशी है कि उनकी शुरुआत देश के लोकसभा से हुई और मेरी विधान सभा से हुई थी। आज मुझे उनके नजदीक बैठने का मौका मिला है। कई समितियों में उन्होंने काम किया है और केन्द्रीय सरकार में काम किया तथा भारत सरकार की तरफ से दो बार युनाइटेड नेशन्स में प्रतिनिधित्व किया। कई बार चेयरमैन के पैनल से सदन को किस तरह से चला सकते हैं, इसका कृत्य भी उन्होंने इस सदन के सामने दिखाया। मुझे विश्वास है कि उनका मार्गदर्शन सदन को मिलेगा और सदन को अपनी कार्यवाही चलाने के लिए मदद मिलेगी। उनका अनुभव हम लोगों को मिलेगा।

मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि विपक्ष को एक पद देने की जो परम्परा है, उस परम्परा को उन्होंने स्वीकार किया है। इसमें युनैनिमिटी लाने में सभी राजनीतिक दलों ने सहयोग दिया। मैं खास तौर से तृणमूल कांग्रेस की नेता, ममता बनर्जी और एआईएडीएमके की नेता, जयललिता, का यहां उल्लेख करना चाहता हूं कि इस युनैनिमिटी को लाने के लिए उन्होंने सदन से और सदन के बाहर बहुत मदद की। मुझे विश्वास है कि यह नई जिम्मेदारी, जो आज सईद साहब के ऊपर पड़ी है, इसमें वे कामयाब होंगे और विपक्ष की तरफ से इस काम में हमारा पूरा सहयोग रहेगा। यही मैं उनको विश्वास दिलाना चाहता हूं।

[अनुवाद]

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर) : महोदय जब से मैं इस सदन में हूं मैं अपने मित्र श्री पी॰ एम॰ सईद को देख रहा हूं और जिस तरह से उन्होंने अपने आप को एक आम सदस्य, एक मंत्री या विभिन्न समितियों के चेयरमैन के रूप में पेश किया है, उनकी मैं सराहना, आदर और प्रशंसा करता हूं। उनके बारे में यहां जो कुछ कहा गया है उससे यही साबित होता है कि वे इस पद के लिए योग्य व्यक्ति थे जो आज सदन ने उन्हें लोक सभा के उपाध्यक्ष पद पर चुना है। उन्होंने उनके निर्णयों या निष्कर्षों को देते समय गुस्सा, अधीरता या किसी प्रकार का दबाव नहीं दिखाया। वे ऐसे व्यक्ति हैं जो पूरी तरह निष्पक्ष हैं और जो इस सभा को और सभी सदस्यों को बहुत आदर के साथ देखते हैं।

मैं अपने दल की तरफ से उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और उन्हें कर्त्तव्यों के निर्वहन में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन देता हूं ताकि उन्होंने इस दिशा में पिछले कई वर्षों में जो श्रेय अर्जित किया है, इसमें और वृद्धि हो।

मुझे और कुछ नहीं कहना है। मैं बहुत खुश हूं और मुझे विश्वास है कि यहां उपस्थित सभी सदस्य सभा के इस फैसले से खुश होंगे कि उन्होंने एक मत से श्री पी॰ एम॰ सईद को चुना है। यह भी एक तरह से बहुत बड़ी बात है कि चुनाव के संबंध में विवाद उठने की आशंका थी। महोदय, जैसा कि आप जानते ही हैं यह मामला एक मत से सुलझ गया। श्री सईद के अपने व्यक्तित्व, अपनी प्रतिष्ठा और इस सभा में अपने स्थान के कारण ऐसा बड़ा काम हो सका।

इसलिए मैं अपने सभी साथियों के साथ एक बार फिर उनके चुने जाने पर उन्हें शुभकामनाएं और बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

श्री चन्द्रशेखर (बलिया) (उ.प्र.) : मोहतरम सदर, मैं पहली बार किसी को इस सदन में मुबारकबाद देने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं पी॰ एम॰ सईद जी को पहले दिन से जानता हूं, उस समय मैं भी कांग्रेस पार्टी में था। कांग्रेस पार्टी के कुछ नये सदस्यों ने कुछ बुनियादी मुद्दों पर सवाल उठाए थे, उस समय पी॰ एम॰ सईद सबसे कम उम्र के मेम्बर थे जिन्होंने उसमें हिस्सा लिया था। उन्होंने लक्षद्वीप में समुद्र के बीच में, आदिवासी इलाके में जन्म लिया। उन्होंने बेबसी को, पीड़ा को नजदीक से देखा है। उन्होंने कुदरत के रूप को भी देखा है और उसके खिलाफ जद्दोजहद की है। इंसानियत को बुलंदियों पर ले जाने के लिए उनके दिल में एक तमन्ना है और वह तमन्ना उन्हें सियासत में लाई तथा उस तमन्ना को उन्होंने हमेशा जाहिर किया। उनके दिल में एक गहराई है, जिस गहराई से इंसानिसत को बुलंदियों में ले जाने के लिए वह हमेशा कोशिश करते रहे। विवेकानंद जी ने एक बार कहा था कि इंसान ने अपने को मजहब के छोटे-छोटे दायरों में, कुओं में बांट लिया है। उन्होंने इंसानियत के समुद्र को नहीं पहचाना है। वह केवल समुद्र की गोद में पले नहीं, उन्होंने इंसानियत के बड़े समुद्र को पहचाना है और इसीलिए उन्होंने इस तरह के समाज के लिए,